



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड ३—उद्घोषणा (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

श्रीधर सिंह प्रकाशन

PUBLISHED BY AUTHORITY

वा. 46]

नई दिल्ली, बुधवार, अनवरी 30, 1991/मात्र 10, 1912

No. 46] NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 30, 1991/MAGHA 10, 1912

इस भाग में खिल पृष्ठ संख्या वी जारी है जिसमें कि यह भाग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 जनवरी, 1991

सा.या.नि. 51 (म)।—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्नलिखित
उद्घोषणा सर्वाधिकारण के सूचनार्थी प्रकाशित वी जा रही है।—

यह भीतर, भारत के राष्ट्रपति, आर. वेंकटरामन, का यह समाधान
हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसमें तमिलनाडु राज्य
का जास्त भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात 'संविधान'
कहा जाता है) के उपर्योगों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है;

यह, इब में, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शर्तियों का
तथा उस निमित्त मुझे समर्थ बनाने वाली भाष्य सभी शर्तियों का
प्रयोग करते हुए एतद्वारा उद्घोषणा करता है कि मैं—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी हत्या और उस राज्य के
राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोगेत्व सभी शर्तियों
भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं संभालता है;

(ख) घोषित करता है कि उक्त राज्य के विधानमंडल की
शक्तियाँ संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के प्रधीन
प्रयोगेत्व होंगी; और

(ग) निम्नलिखित भाव्याग्रहिक और पारिणामिक उपबंध करता है
जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभारी बनाने के लिए
मुझे आवश्यक या चाल्हनीय प्रतीत होते हैं; अर्थात्—

(i) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खण्ड (क) के पाइयार
पर मेरे द्वारा संभाले गए कुत्यों भारत शक्तियों का
प्रयोग करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के
रूप में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समाझूँ
उठने रेख्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करना
विधिपूर्ण होगा;

(ii) उस राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित
उपर्योगों के प्रवर्तन की एवं द्वारा विलोक्य किया
जाता है, अर्थात्—

अनुच्छेद 3 के पश्चात् का उतना भोग जितने का संबंध गठितपूर्ण
द्वारा राज्य के विधानमंडल की निदेश करने से है;

अनुच्छेद 151 वे खण्ड (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत
की नियंत्रण, एवं महानेता परीक्षक द्वारा राज्यपाल को प्रस्तुत भी गई रिपोर्ट
के राज्य विधानमंडल के समक्ष रखे जाने रहे हैं;

अनुच्छेद 163 और 164;

अनुच्छेद 166 के खण्ड (3) का उतना भाग जितने का संबंध
राज्य सरकार के कार्यों का अधिकार के बीच आवेदन से है;

अनुच्छेद 167 और अनुच्छेद 169 के खंड (1) का उत्तमा भाग जिनमें का संवंध राज्य की विधान सभा द्वारा संकलन के पारित किए जाने से है;

अनुच्छेद 174 का खंड (1), भी— यह (2) का उत्तरांश (क) ;
अनुच्छेद 175 से 178 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं);
अनुच्छेद 179 का खंड (ख) और (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम अंशक, और अनुच्छेद 180 और 181;

अनुच्छेद 186 का उत्तमा भाग जिनमें का संवंध विधान सभा के उपाधिकार के संबंधमें और भौतिक से है; अनुच्छेद 188, 189, 193 194, 195 तथा 196;

अनुच्छेद 199 का खंड (3) और यह (4);

अनुच्छेद 202 के खंड (3) का उत्तमा भाग जिनमें का संवंध विधान सभा के उपाधिकार के संबंधमें और भौतिक से है; अनुच्छेद 208 व 211 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) अनुच्छेद 213 के खंड (1) का प्रथमक, और यह (3) का प्रथमक, और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उत्तमा भाग जिनमें का संवंध विधान संदर्भ रिपोर्ट की राज्य विधान मंडल के समक्ष रखे जाने में है;

(iii) उत्तमा राज्य का विधान सभा एवं द्वारा भौतिकी जाए है;

(iv) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निवेश का अर्थ उस राज्य के संवंध में गट्टपति के प्रति निवेश तथा आया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मंडल के प्रति किसी निवेश का, जहाँ नक उसका संवंध उसके हुत्यों और उसकी भागियों से है, और, जब नक कि संवर्द्ध में वानप्रथा अधिकार न हो, संवर्द्ध के प्रति निवेश लगाया जाएगा, और विशिष्टताएँ अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधानमंडल के प्रति निवेश का अर्थ क्रमांक गट्टपति और संवर्द्ध के प्रति निवेश लगाया जाएगा :

एवं इसमें कोई भान अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 व अंकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों भी सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुच्छेद के द्वितीय 1 गे 4 तक (जिसमें ये दोनों भी सम्मिलित हैं) के उपर्योगी पर प्रभाव नहीं डालेगी अवश्य राष्ट्रपति को इस नक के उपर्योग (1) के बावेत उस भीमा वह जहाँ नक वह ठीक भविते उत्तमा राज्य के राज्यपाल के भाषण में कार्य करने में निरागित करेंगे,

(v) संविधान में उक्त राज्य के विधान मंडल के या एवं द्वारा वनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निवेश का ऐसा अर्थ लगाया जाएगा मानो उसके अतिरिक्त हम उद्घोषणा के प्राचार पर संवेद द्वारा, गट्टपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खंड (1) के उपर्योग (क) । । में निर्दिष्ट प्रथम प्राधिकारी द्वारा उक्त राज्य के विधानमंडल की गणित्यों का प्रयोग करते हुए बनाए गए अधिनियम या विधियों के प्रति निवेश है, और नमिनतादु नामांगण खंड अधिनियम, 1891 (1891 का नमिनतादु अधिनियम 1), जैसाकि वह नमिनतादु राज्य में वाहू है, और गाधारण खंड अधिनियम 1897 (1897 का 10) का उत्तमा भाग जिनमें राज्य विधियों पर वाहू है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में

ऐसे प्रभावी होगा मानो वह उत्तमा राज्य विधानमंडल का अधिनियम हो ।

नहीं विलीन,
30 जनवरी, 1991

श्रावण केट्टरमन,
गवर्नर

[फा. सं. V/11013/2/91-7. 15 जनवरी]

MINISTRY OF HOME AFFAIRS NOTIFICATION

New Delhi, the 30th January, 1991

G.S.R. 54(E).—The following Proclamation by the President is published for general information:

Whereas, I, R. Venkataraman, President of India, am satisfied that a situation has arisen in which the Government of Tamil Nadu cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution");

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I —

(a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State;

(b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament; and

(c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely :—

(i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State,

(ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely :—

so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State;

so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India;

articles 163 and 164;

so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State;

article 167 and so much of clause (1) of article 169 as relates to the passing of a resolution by the Legislative Assembly of a State;

clause (1), and sub-clause (a) of clause (2), of article 174; articles 175 to 178 (both inclusive) clauses (b) and (c) of article 179 and the first proviso to that article and articles 180 and 181;

so much of article 186 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly; articles 188, 189, 193, 194, 195 and 196; clauses (3) and (4) of article 199;

so much of clause (3) of article 202 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly; articles 208 to 211 (both inclusive), the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213; and

so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State;

(ii) the Legislative Assembly of the said State is hereby dissolved;

(iv) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President, and any reference therein to the Legislature of the State shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, the references in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State shall be construed as references to the President and to Parliament; respectively:

Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State;

(v) any reference in the Constitution to Acts or laws of, or made by, the Legislature of the said State shall be construed as including a reference to Acts or laws made in exercise of the powers of the Legislature of the said State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution, and the Tamil Nadu General Clauses Act, 1891 (Tamil Nadu Act 1 of 1891), as in force in the State of Tamil Nadu, and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897), as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the said State.

New Delhi.

The 30th January, 1991.

R. VENKATARAMAN,
PRESIDENT

[No. V|11013|2|91-CSR]

आदेश

नई दिल्ली, 30 जनवरी, 1991

मा.का.नि. 55 (प्र).—राष्ट्रपति द्वारा गारी किया गया निम्न-
लिखित आदेश सर्वतोत्तरण के मूलनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।—

भारत के संविधान अनुसंधेद 356 से ग्रन्थीन मेरे द्वारा आज 1991 वर्ष के जनवरी, माम के लिए दिन जारी की गई उद्घोषणा के खंड (ग) के उपखंड (1) का अनुसरण करते हुए, मैं एतद्वारा निर्देश देता हूँ कि तमिलनाडु राज्य सरकार के सभी काल्प और तंत्रिकाओं के ग्रन्थीन या उस राज्य में प्रचलित किसी विधि के ग्रन्थीन द्वारा राज्य के राज्यपाल में निहित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी प्रक्रियाएँ, जिनको राष्ट्रपति ने उक्त उद्घोषणा के खंड (क) के आधार पर सभी संभाल किया है, राष्ट्रपति के ग्रन्थीन द्वारा भी प्रयोक्तव्य होंगी।

नई दिल्ली,
30 जनवरी, 1991

आर. वेंकटरामन,
राष्ट्रपति

[ना. नं V-11013/2/91-गी.एस.आर.]

आर के, गारीब, गह सचिव

ORDER

New Delhi, the 30th January, 1991

G.S.R. 55(E).—The following Order by the President is published for general information:—

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 30th day of January, 1991, by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Tamil Nadu and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in

force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

New Delhi.

The 30th January, 1991.

R. VENKATARAMAN,
PRESIDENT

[No. V|11013|2|91-CSR]

R. K. BHARGAVA, Home Secy.